International Journal of Research Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 12
December 2015

21वीं सदी में गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता: एक अध्ययन

पूजा

रिसर्च स्कॉलर
राजनीतिक विज्ञान विभाग
म.द.वि., रोहतक

शोध आलेख सार: प्रस्तुत शोध पत्र में मैंने गुटनिरपेक्षता आन्दोलन के उद्भव के तात्कालिक कारण व उस समय इसकी महत्ता का वर्णन किया है तथा बदलते विश्व परिदृश्य में गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता पर पैदा उसे सन्देह को स्पष्ट करते हुए, इसकी प्रासंगिकता के नये पहलुओ का वर्णन किया है तथा नाम के सदस्य देशों की विश्व समुदाय के प्रति नई जिम्मेवारी का वर्णन किया है तथा भारत के लिए गुटनिरपेक्षता आन्दोलन की महत्ता पर प्रकाश डाला है और विश्व की पैदा हुई नई समस्याऐं शरणार्थी समस्या व आतंकवाद से निपटने में इन देशों के प्रयासो को स्पष्ट किया है

मूलशब्द : पूंजीवाद, हिन्दमहासागर, साम्यवाद, गुटनिरपेक्षता, नाभिकीय।

भूमिका: दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था शान्ति व स्थिरता की उपेक्षा कर रही थी। वहीं विश्व को समकक्ष एक अनचाही व नवीन अवधारणा उभर कर आई जो तत्काल उदित हुआ विचार नहीं था। यह एक लम्बे समय से दो महान शक्तियों सोवियत रूस व अमेरिका या पश्चिमी देशों के मध्य वैचारिक विभाजन था जो साम्यवाद व पूंजीवाद के रूप में प्रकट हुआ। जिसने एक नवीन संघर्ष को जन्म दिया। जिसे अमेरिकी विचारक बर्नाइ बरूच ने शीतयुद्ध का नाम दिया जो विचारधाराओं के संघर्ष को इगित करती है। विश्व दो गुटों में बंट गया था। 1.साम्यवाद 2. पूजींवाद।

दोनों ही गुटों का यह प्रयास था कि एशिया अफ्रीका के नवस्वतंत्र देशों को अपने–अपने वैचारिक ढंग में रंगना। नवोदित राज्य ने स्वयं को एक ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय स्थितियों में पाया जिसके केवल दो रूप ही थे परन्तु उन्होंने एक अलग विकास मार्ग अपनाया जो कि न ही पूंजीवाद था और न ही साम्यवाद। यह गुटनिरपेक्षता के रूप में उभर कर आया। इन देशों ने इस वैचारिक संघर्ष से दूर रहना ही उपयुक्त समझा क्योंकि

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 12
December 2015

यह अभी अभी विदेशी प्रभुत्व से स्वतंत्र हुये थे। यह अपने निणर्य स्वयं लेना चाहते थे। अगर यह इन गुटों में शामिल होते तो दोबारा पराधीनता के चंगुल में फंस जाते।

गुटनिरपेक्षता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की आरम्भिक विचारधारा का प्रकटीकरण जवाहरलाल नेहरू के विचारों में दिखाई देता है। 7 सितम्बर 1946 में भारत की विदेश नीति के बुनियादी सिद्धान्त के सम्बन्ध में घोषणा की कि भारत सभी देशों के साथ मैत्रिक सम्बन्ध बनाये हुए प्रत्येक प्रकार की गुटबाजी से अलग रहेगा। उनकी यही अभिव्यक्ति एशियन रिलेशन कान्फ्रेंस में दिखाई दी। 1947 में ''एशिया के देश बहुत समय से पश्चिमी देशों की अदालत में अर्जी देने वालों की हैसियत से रहते आए हैं अब यह दौर खत्म हुआ।''

इसी क्रम में 1947–1949 में एशिया–अफ्रीका सम्मेलन में एकता की अभियक्ति हुई इसे दौर में बाहुंग सम्मेलन सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। (24 अप्रैल 1955) इण्डोनेशिया की राजधानी में एशिया के कई महान नेताओं ने मुलाकात की जिनमें भारत, जवाहरलाल नेहरू, मिस्र– नासिर, यूगोस्लाविया से हीटो। इन्होंने सैन्य गुटों से दूर रहने की नीति अपनाई तथा विश्वशान्ति व सहयोग संवर्द्धन पर बल दिया। कुल मिलाकर इन आयामों ने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को जन्म देने में मुख्य भूमिका निभाई। इन देशों ने कुछ मूल सिद्धान्त अपनायेः–

1. स्वतंत्र विदेश नीति का अनुसरण
2. सैन्य गठबन्धनों से पर्याप्त दूरी, विश्वशान्ति से सहयोग व समर्थन, निःशस्त्रीकरण

साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद के सभी रूपों का विरोध करना। इन्हीं प्रयासों की परिणिती 1 सित्मबर 1961 नाम की स्थाना के रूप में हुई। बेलग्रेइ में 25 देशों व तीन प्रेक्षकों ने (एक्वाडोर) बोलेविया, ब्राजील ने भाग लिया। इस नाम का यह पहला सम्मेलन संपन्न हुआ जो विश्वशान्ति व सुरक्षा, सुदृढीकरण पर आधारित था। इस सम्मेलन की मुख्य उपलब्धि यही थी कि शीतयुद्ध की स्थिति में गुटबाजी का विरोध करना और उस उष्णता के वातावरण में विश्वशान्ति का आहवान करना। अक्तूबर 1964 में इसका दूसरा शिख्र सम्मेलन मिस्र के काहिरा में सम्पन्न हुआ। इसकी मुख्य उपलब्धी थी सदस्यता का बढना। लगभग 30 लैटिन अमेरिकी देशों ने इसमें भाग लिया। इस सम्मेलन में विश्व को नाभिकीय शस्त्रों से दूर रखने पर बल दिया। हिन्द महासागर में अमेरिकी सैन्य अड्डों

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 12
December 2015

का विरोध किया गया। तीसरी दुनिया के देशों के हितों का एक समूह यू.एन.ओ में जी–77 उभर कर आया व जून 1964 में व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन संपन्न हुआ।

लुसाका सम्मेलन 1970 में आयोजित हुआ जिसमें आत्मनिर्भरता को मुख्य लक्ष्य बनाया गया तथा अपने–अपने देश के प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग जन कल्याण हेतु किया।

कोलम्बो सम्मेलन 1976 में 86 देशों ने भाग लिया। इसमें विश्व व्यापार व्यवस्था को पुर्नसंरचना का मुद्दा उठाया गया।

हवाना सम्मेलन 1979 में हुआ। यह अमेरिकी महाद्वीप में आयोजित पहला सम्मेलन था। इस सम्मेलन में लैटिन अमेरिका में अमेरिका की साम्राज्यवादी नीति की आलोचना की।

नई दिल्ली सम्मेलन 1983 में हुआ। इसमें भारत की प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने विश्व का सबसे बड़ा आन्दोलन माना। उन्होंने रंगभेद के खिलाफ आवाज उठाई राष्ट्रों में मध्य समानता एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के आधार, आर्थिक एवं राजनैतिक लोकतान्त्रिकरण पर अपने विचार दिए।

हरारे सम्मेलन 1986 में हुआ। इसमें अमेरिका व सोवियत रूस के मध्य नाभिकीय शस्त्रों की होड़ शुरू हुई। परन्तु अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन के स्टॉर वॉर कार्यक्रम से निःशस्त्रीकरण की प्रक्रिया को धक्का पहुंचा

जकार्ता सम्मेलन 1992 में हुआ तो इसी समय अमेरिका ने ईराक पर आक्रमण किया। ईराक जो कि केवल नाम का सदस्य था। उसका केवल एक लक्ष्य था कि अमेरिका के विरूद्ध अन्य देशों से समर्थन प्राप्त करे, परन्तु उसकी यह इच्छापूर्ति नहीं हो पाई। अतः उसने नाम को अप्रासंगिक साबित कर दिया।

कुआलालाम्पुर सम्मेलन 2003 के दौरान अमेरिका द्वारा ईराक पर एक तरफा कार्यवाही की घोर निन्दा की गई।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 12
December 2015

तेहरान सम्मेलन वर्ष 2012 के समय भारत के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने नाम की प्रासंगिकता को उतना ही महत्वपूर्ण माना जो कि शुरूआत में था।

गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता: गुटनिरपेक्ष सम्मेलन की स्थापना से यह पूंजीवाद व साम्यवाद दोनों के लिए ही संदेह का प्रतीक बना हुआ था। साम्यवादी मानते थे कि इसका गुप्त रूप से सम्बन्ध पूंजीवाद के साथ है, वहीं पूंजीवादी इसे साम्यवादी गुट का ही भाग मानते थे। गुटनिरपेक्षता को एक अलग गुट के रूप में मान्यता एक लम्बे समय के बाद मिली। अब इसके उत्तरदायित्व तथा उद्देश्यों में समय के साथ बदलाव आया जोकि एक प्राकृतिक नियम है कि प्रत्येक चीज में एक अंतराल के बाद अवश्य होता है। यही बदलाव 21वीं शताब्दी के गुटनिरपेक्षता में हुआ।

21वीं शताब्दी में गुटनिरपेक्षता का महत्व:

- विश्वव्यापार संगठन में पूंजीवादी देशों से विकासशील देशों के हितों की रक्षा करना। विकासशील देशों द्वारा अपने उत्पादों को विश्वव्यापार प्रतिस्पर्धा में योग्य बनाने के लिए सरकारी सहायता उपलब्ध करवाई जाये। इस सहायता का विरोध विकसित देशों द्वारा किया गया।
- एशिया प्रशान्त क्षेत्र. में शक्ति संतुलन को लेकर बनी टकराव की स्थिति में गुटनिरपेक्षता अत्यन्त महत्व रखता है। आज भी शीत युद्ध जैसी स्थिति बनी हुई है। बस बदलाव केवल क्षेत्र विस्तार में है।
- शरणार्थी समस्या आज विश्व की सबसे भयावह समस्या है। विश्व की करोड़ों जनता आज बेघर है। इसलिए अब गुटनिरपेक्षता की यह महत्वता है कि इस संघर्ष में सभी देश मिलकर शरणार्थी समस्या का समाधान निकालें।
- चीन की बढ़ती महत्वाकांक्षा को रोकने के लिए गुटनिरपेक्षता कारगर साबित हो सकता है। सभी गुटनिरपेक्ष देश आपस में मिलकर अपने पुराने नियमों पर बल देना चाहिए तथा किसी भी बाहरी शक्ति को अपने क्षेत्र में सैनिक अड्डे न बनाने दिये जायें।
- आज वैश्विक आतंकवाद बहुत बड़ा खतरा बना हुआ है। उसका सामना करना गुटनिरपेक्षता का मुख्य उद्देश्य है। पश्चिम एशिया आज नस्लीय संघर्ष का सामना कर

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 12
December 2015

रहा है। उसे इस संघर्ष में लोकतांत्रिक शासन को समर्थन देने में भूमिका निभानी चाहिए।

- यू.एन.ओ में अपनी महत्वता को चिरस्थायी बनाये रखना व स्थायी सदस्यता का प्रसार करना इसका मुख्य लक्ष्य रहा है।
- अपने क्षेत्रीय आर्थिक व सामाजिक ब्लॉक, आशियान व सार्क, बिम्स्टेक को प्रभावी बनाना है।

निष्कर्ष:

शीत युद्ध के समय में विकासशील व तीसरी दुनिया के देशों के अगुवा के रूप में 1961 में उदित गुटनिरपेक्षता ने अपने निर्धारित लक्ष्यों व सिद्धान्तों को बखूबी निभाया तथा समय के साथ–साथ अपने आप में परिवर्तन किया। कुछ विचारकों का मानना था कि शीत युद्ध में ही यह उपयुक्त था और आज इसका कोई महत्व नहीं है। इसे समाप्त कर देना चाहिए। परन्तु यह सभी धारणायें उचित नहीं है। गुटनिरपेक्षता के साथ–साथ केवल उद्देश्य बदले। यह विकासशील देशों के लिए आज भी उतना ही प्रासंगिक है। आज इसे एशिया प्रशान्त क्षेत्र में चीन व अमेरिका के बढते प्रभाव को रोकना है तथा इन देशों को दोबारा अपने महत्वपूर्ण संसाधनों को मिलकर प्रयोग करना है।

सन्दर्भ:

- बी.एल. फाड़िया, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली.
- पुष्पेश पंत, 21वीं शताब्दी में अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध, टाटा मैक्ग्राहिल्स, नई दिल्ली।
- अरूणोदय वाजपेयी, समकालीन, अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध, पियरसन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- रहीस सिंह, वैश्विक सम्बन्ध, पियरसन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- ण्पापचमकपंण्बवउण